ww [redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी. ... -14

आ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक: 41
सृष्टि संवत् 1960853114
12 जनवरी 2014
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
दूरभाष : 2292926., 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 41, 9/12 जनवरी 2014 तदनुसार 29 पौष सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000

16 जनवरी जन्मदिवस पर विशेष

धुन के धनी-स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज

ले० श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म पौष पूर्णिमा, 1877 को लुधियाना के मोही ग्राम में हुआ था। वैसे भी लुधियाना को यह गौरव प्राप्त है कि इसने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के यशस्वी सेनापति लाला लाजपतराय को जन्म दिया था। शास्त्रार्थ समर के अजयी योद्धा स्वामी दर्शनानन्द जी को जन्म देने का श्रेय भी इसी जिले को प्राप्त है। पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज आर्य समाज के लौहपुरूष थे। इनका जन्म सिक्ख परिवार में हुआ था। स्वामी जी के जन्म के समय ऋषिवर दयानन्द जी ने वैदिक धर्म की दुन्दुभि पंजाब में बजाई थी। उस वैदिक धर्म के जयघोष का असर लुधियाना पर विशेष रूप से पडा और लुधियाना जिले ने बहुत से धार्मिक नेता, समाजिक नेता समाज को दिये। उसी कड़ी में एक बाल ब्रह्मचारी केहर सिंह अपने माता-पिता की गोद में पल रहा था।

बालक केहर सिंह की प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम व ननिहाल में हुई। अपने ननिहाल में रहते हुए केहर सिंह वहां के प्रसिद्ध उदासीन साधुओं के डेरे में आते जाते थे। डेरा के महन्त पं. विशनदास की प्रेरणा से उन्होंने संस्कृत पढ़ी। पं. विशनदास जी महर्षि दयानन्द जी के विचारों से काफी प्रभावित थे। पं. विशनदास जी के सत्संग से केहर सिंह पर भी वैदिक धर्म का रंग चढ़ गया। इन्होंने आयुर्वेद तथा युनानी चिकित्सा का भी अध्ययन किया हुआ था। पिता जी चाहते थे कि केहर सिंह को सेना में जरनैल बनाएं परन्तु केहर सिंह ने गृहस्थी के चक्कर में न पड़कर देश और धर्म की सेवा करने का दृढ निश्चय कर लिया था। इस नौजवान को किसी प्रकार कोई मोह एवं मत-मतान्तर घर में बांध न सका और भरी जवानी में जो बचपन में वैदिक धर्म का नाद कानों में पडा था उस वैदिक धर्म की रक्षा के लिए देश, जाति और धर्म की ढाल बनने के लिए आर्य समाज रूपी युद्ध में कूद पडा। इतिहास इस बात का गवाह है कि जब-जब भी जहां-जहां भी आर्य समाज में आन-बान और शान के लिए जरूरत पड़ी वहां पर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज सबसे आगे आए।

जब 1925 ई. में मथुरा में महर्षि जी की जन्म शताब्दी मनाई गई तो वहां पर पूज्य स्वामी जी ने व्याख्यान दिया और कहा कि हम कितना भी आर्य समाज के लिए कार्य करें पर महर्षि दयानन्द जी के ऋण से उऋण नहीं हो सकते । इसी अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा ने निर्णय लिया कि एक उपदेशक विद्यालय खोलना चाहिए। यह प्रस्ताव पारित हो गया। लाहौर में श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय खुला। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज इस उपदेशक विद्यालय के दस वर्ष तक आचार्य रहे। विद्यालय से कोई भी पैसा अपने ऊपर खर्च नहीं करते थे और भिक्षाटन करके अपना काम चलाते थे। सन् 1938 में दीनानगर में दयानन्द मठ की स्थापना की। यह मठ आर्य समाज का केन्द्र बन गया। जब आन्ध्रप्रदेश में हैदराबाद के नबाव ने हिन्दुओं और आर्य भाईयों पर अत्याचार करना शुरू किया तो आर्यों ने सत्याग्रह शुरू किया। वहां पर कोई हिन्दू या आर्य अपने मन्दिरों में पूजापाठ या हवन यज्ञ नहीं कर सकते थे। इसलिए आर्य समाज ने सत्याग्रह शुरू कर दिया। सत्याग्रह का संचालन पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को सौंपा गया। हैदराबाद का नबाव धन और वैभव से सम्पन्न था उससे लोहा लेना कोई आसान काम नहीं था। जब स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी और नारायण स्वामी जी हैदराबाद में सत्याग्रह के लिए पहुंचे तो वहां के लोग कहने लगे कि आप कैसे नबाव से टक्कर ले सकते हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के पूर्वज उस हल्दी घाटी से आए थे जहां महाराणा प्रताप की शौर्य गाथा गुंजायमान थी। जहाँ देश, धर्म और जाति के लिए परवाने शहीद हुए थे। उन्हीं पूवर्जों की भावना तथा वही खून स्वामी जी की रगों में हिलोरें ले रहा था। सचमुच स्वामी जी की मेहनत ने आर्यों के अन्दर नया उत्साह भर दिया जिससे सारा उत्तरी भारत सुदृढ और संकल्पित होकर स्वामी जी के नेतृत्व में दक्षिण दिशा को चल दिए और पांच महीनों के अन्दर ही हैदराबाद के नबाव के घुटने टिका दिए। जहां सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने पर पाबन्दी थी। रामायण, गीता और उपनिषद पढ़ने वालों को देशद्रोही समझा जाता था। मन्दिरों में घंटियां बजाना महापाप था। उसी हैदराबाद में नबाव की कोठी में वैदिक धर्म के जयघोष से आकाश गुंजायमान हुआ। वहां के नबाव ने आर्य समाज के आगे घुटने टेक दिए। जब भारतवर्ष आजाद हुआ तो सारी रियासतें भारतवर्ष में मिल गई पर हैदराबाद का नबाव भारतवर्ष में मिलना नहीं चाहता था पर वहां तत्कालीन गृहमन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने जाकर रातों रात नबाव के हस्ताक्षर करवाकर भारतवर्ष में मिला लिया। सरदार पटेल ने कहा था कि मैंने तो कुछ नहीं किया मेरे से पहले ही आर्य समाज ने नबाव की कमर तोड़ दी थी।

पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जीवन अत्यन्त प्रेरणाप्रद है। वे एक आदर्श साधु, दूरदर्शी, कर्मठ व त्यागी नेता थे। वे एक [illegible] विद्वान, इतिहासवेत्ता व वीर सेनापति थे। ऐसे पूजनीय महापुरुष से उनके जन्मदिवस पर हम प्रेरणा लें। स्वामी जी के गुणों को धारण करके हम अपने जीवन को सफल बनाएं। आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाएं। आज स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन वीरता एवं साहस, त्याग एवं बलिदान, देश एवं धर्म भक्ति का जो पथ उन्होंने प्रशस्त किया है वह अनन्त काल तक सारे संसार को प्रेरणा देता रहेगा।

मकर सक्रान्ति पर्व

-ले० श्री स्वतन्त्र कुमार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार

मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। जंगल, वन, पर्वत सर्वत्र शीत का आवरण होता है। रात्रौ जानू दिवा भानुः रात्रि में जंघा और दिन में सूर्य किसी कवि की यह कहावत इस अवसर पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होती है। अब तक दिन की यह अवस्था थी कि सूर्योदय होते ही अस्ताचल के गमन की तैयारियां आरम्भ कर देते हैं। मानो दिन रात्रि में लीन हुआ जाता था परन्तु आज मकर संक्रान्ति के मकर ने उसको निगलना आरम्भ कर दिया है। मकर संक्रान्ति का सम्बन्ध सूर्य से है। सूर्य की परिक्रमा करने में पृथ्वी को एक वर्ष का समय लग जाता है जिस लम्बे गोलाकार मार्ग से पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है उसे क्रान्तिवृत्त कहा जाता है। ज्योतिष के अनुसार इस क्रान्तिवृत्त के बारह भाग किए गए हैं जिन्हें राशि भी कहा जाता है। इन क्रान्तियों का स्थान विषुवत् रेखा के उत्तर और दक्षिण दोनों ओर माना गया है। जब पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है तो आधे वर्ष तक वह इस स्थिति में रहती है कि सूर्य की किरणें सीधी उत्तरी क्रान्तियों पर पड़ती हैं। इसे भी यों कहा जा सकता है कि सूर्य आधा वर्ष क्रान्तिवृत से उत्तर की ओर और आधा वर्ष दक्षिण की ओर उदय होता हुआ दिखाई देता है। सूर्य की मकर संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन शुरू होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विशेष महत्वशाली माना जाता है। अतएव उत्तरायण के आरम्भदिवस मकर संक्रान्ति को भी अधिक महत्व दिया जाता है और चिरकाल से यह पर्व मनाया जाता है।

सूर्य के उत्तरायण आने पर दिन बड़ा होने लगता है। आज के दिन यह क्रम आरम्भ होता है। आध्यात्मिक दृष्टि से उत्तरायण को ज्ञानमय संसार का मार्ग माना गया है। दूसरी ओर दक्षिणायन को अज्ञान संसार का मार्ग बताया गया है। उत्तरायण काल की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थ पर्यन्त सविशेष वर्णन की गई है। वैदिक ग्रन्थों में उसे देवयान कहा गया है और ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग की अभिलाषा इसी उत्तरायण में रखते हैं। उनके विचारों से उत्तरायण काल में देह त्यागने से आत्मा सूर्यलोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शर-शय्या पर शयन करते हुए प्राणों को त्यागने की प्रतीक्षा की थी। इसलिए हमारे ऋषियों ने सूर्य के उत्तरायण संक्रमण तिथि को मकर संक्रान्ति का पर्व निर्धारित कर दिया।

मकर संक्रान्ति शिशिरान्त की पूर्व सूचना देती है। बासन्ती फसलों से खेत लहलहाने लगते हैं जिन्हें देखकर किसानों के मन आनन्दित हो जाते हैं। किसानों के लिए मकर संक्रान्ति आनन्द का त्योहार है। मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सब प्रान्तों में तिल और गुड़ या खाँड के लड्डू बना कर जिनको तिलवे कहते हैं दान किए जाते हैं और इष्ट मित्रों में बाँटे जाते हैं। वैद्यक शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तेल, तूल(रूई) बतलाए गए हैं जिसमें तिल सबसे मुख्य हैं इसलिए पुराणों में इस पर्व के सभी कृत्यों में तिल के प्रयोग को विशेष महत्त्व दिया जाता है और उसको पापनाशक कहा जाता है। मकर संक्रान्ति के पर्व पर दीनों को सर्दी से बचने के लिए कम्बल आदि दिए जाते हैं क्योंकि भारतीय संस्कृति की आधारशिला दान की पुनीत भावना पर टिकी हुई है। वेद ने स्पष्ट शब्दों में यत्र तत्र दान की महिमा कही है- शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर अर्थात् मन्त्र द्वारा कमाने की शक्ति से दसगुणा दान की भावना हो ऐसा उपदेश दिया गया है। वास्तव में दान से बढकर पुण्य और परोपकार का और कोई उपाय नहीं है। नीतिकारों का कथन है कि परोपकाराय सतां विभूतयः अर्थात् सज्जनों की विभूतियां दूसरों के हित के लिए होती हैं हमारे शास्त्रों में धन की तीन गतियां कही गई हैं- दान भोग और नाश। इन तीनों में दान को पहला स्थान दिया गया है। जो धन को दान नहीं करता, उसका भोग नहीं करता उस धन की तीसरी गति होती है। दान धर्म का एक स्तम्भ है इसलिए गीता में कहा गया है कि देश काल और पात्र के अनुसार ही दिया हुआ दान सात्त्विक दान कहलाता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं कि-

दरिद्रान् भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम

अर्थात् हे अर्जुन! दरिद्रों का पालन करो, धनियों को धन मत दो। गीता के इन वचनों में भगवान श्रीकृष्ण ने दान की महिमा को प्रकट किया है। संक्रान्ति काल को पुण्य काल माना जाता है। इस दिन प्रयाग व गंगा जैसे तीर्थों में स्नान किया जाता है। मकर संक्रान्ति के दिन कई स्थानों में मेले लगते हैं। संक्रान्ति में तिल का काफी प्रयोग होता है, विशेषतः दक्षिण भारत में। महाराष्ट्र में तिल-गुड़ बाँटा जाता है और कहा जाता है कि तिल गुड़ लीजिए और मीठा मीठा बोलिए। बंगाल में तिल मिलाकर तिलुआ नामक पदार्थ बनाया जाता है इसलिए मकर संक्रान्ति को तिलुआ संक्रान्ति भी कहते हैं। उत्तर भारत में दाल और भात की खिचड़ी पकाते हैं और दान देते हैं इसलिए संक्रान्ति को खिचड़ी संक्रान्ति भी कहते हैं। इसी दिन दक्षिण भारत में तीन दिन चलने वाला पोंगल नामक महोत्सव मनाया जाता है। पंजाब में मकर संक्रान्ति को माघी कहते हैं। असल में यहां लोहड़ी को लोकप्रियता प्राप्त है जो माघी से एक दिन पहले आती है। इस प्रकार यह पर्व देश के अलग-अलग भागों में अपने-अपने ढंग से मनाया जाता है।

इस प्रकार मकर संक्रान्ति का यह पर्व विशेष रूप से सूर्य के उत्तरायण का पर्व है। यह पर्व दान, वयोवृद्धों के प्रति श्रद्धानमन एवं पुष्ट तथा शक्तिवर्धक भोज्य पदार्थों के सेवन का पर्व है। मकर संक्रान्ति के इस पर्व से प्रेरणा लेकर हम भी अपने जीवन में प्रकाश करें।

वर्ष 2014 के नये कैलेंडर मंगवाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेन्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर देती है। इसी प्रकार सन् 2014 के महर्षि दयानन्द के चित्र वाले कैलेन्डर भी आधे मूल्य पर दिए जाएंगे। इस वर्ष कैलेन्डर का मूल्य चार रूपये प्रति तथा 400 रू. सैकड़ा रखा गया है। इसलिए सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेन्डर सभा कार्यालय से मंगवाकर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय 10 से 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिए समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेन्डर मंगवाएं।

-प्रेम भारद्वाज, सभा महामंत्री

सम्पादकीय.....

माता पिता और गुरू मिलकर सन्तान का निर्माण करें

माता पिता और गुरू सन्तान का निर्माण करने वाले हाते हैं। माता पिता और गुरू जैसा चाहे सन्तान को बना सकते हैं। जब हम संसार में किसी महापुरूष का जीवन चरित्र पढ़ते हैं और उनके जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो हमें स्पष्ट रूप से उनके चरित्रों पर माता,पिता और उसके गुरू की छाप दिखाई देती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में लिखते हैं कि-मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषों वेद अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ा भाग्यवान! जिसके माता और पिता धार्मिक तथा विद्वान हों। जितना माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता। इसीलिए मातृमान् अर्थात् प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान् धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे। बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे, जिससे सन्तान सभ्य हो और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें। जब बोलने लगे तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके वैसा उपाय करे। प्रश्न पैदा होता है कि क्या सचमुच ही माता पिता और गुरू जैसा चाहे श्रेष्ठ सन्तान का निर्माण करे? माता पिता और गुरू सन्तान को महान चरित्रवान, दयावान, पराक्रमी, वीर, योद्धा, धर्मात्मा ईमानदार बनाने में समर्थ है। परन्तु वहीं समर्थ है जो स्वयं कुछ बने हुए हैं, जो स्वयं शिक्षित है, जो स्वयं गुणों का भण्डार है सुयोग्य और लायक है। केवल सुयोग्य माता पिता और गुरू ही सुयोग्य सन्तान का निर्माण कर सकते हैं। इसलिए माता,पिता और गुरू का शिक्षित होना तथा सदाचार से युक्त होना अति आवश्यक है। किसी भी देश की उन्नति का मार्ग उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। जहां पर माता और पिता धार्मिक हों वहीं पर गुरू का श्रेष्ठ सदाचार से युक्त होना भी अति आवश्यक है।

इसीलिए सत्यार्थ प्रकाश में शतपथ ब्राह्मण के इस मातृमान् पितृमान् शब्द का ग्रहण उक्त वचन में किया गया है अर्थात् जन्म से पांचवें वर्ष तक बालकों को माता, छठे वर्ष से आठवें वर्ष तक पिता शिक्षा करें और नवमें वर्ष के आरम्भ में द्विज अपने सन्तानों का उपनयन करके आचार्य कुल में अर्थात् जहां पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करने वाली हों वहां लड़के और लड़कियों को भेज दें। आगे महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि जो माता पिता और आचार्य सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं वे मानों अपने सन्तानों और शिष्यों को अपने हाथों से अमृत पिला रहे हो और जो सन्तानों और शिष्यों का लाड़न करते हैं वे अपने सन्तानों और शिष्यों को विष पिला के नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं। क्योंकि लाड़न से सन्तान और शिष्य दोषयुक्त तथा ताड़ना से गुणयुक्त होते हैं और सन्तान और शिष्य भी ताड़ना से प्रसन्न और लाड़न से अप्रसन्न रहा करें। परन्तु माता पिता और अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें किन्तु उपर से भयप्रदान और भीतर से कृपादृष्टि रखें। माता पिता और गुरू अपने सन्तानों और शिष्यों को सदा सत्य उपदेश करें और यह भी कहें कि जो-जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उन-उन का ग्रहण करो और जो-जो दुष्ट कर्म हों उनका त्याग किया करो। जो जो सत्य जानें उन- उनका प्रकाश और प्रचार करे। किसी पाखण्डी दुराचारी मनुष्य पर विश्वास न करे और जिस जिस उत्तम कर्म के लिए माता,पिता और आचार्य आज्ञा देवें उस उस का यथेष्ट पालन करो। जैसे माता पिता ने धर्म विद्या अच्छे आचरण के श्लोक, अन्य वेदमन्त्र कण्ठस्थ कराए हों उन-उन का पुनः चिन्तन करें। जैसे प्रथम समुल्लास में परमेश्वर का व्याख्यान दिया है उसी प्रकार मान कर के उसकी उपासना करें। जिस प्रकार आरोग्य विद्या और बल प्राप्त हो उसी प्रकार भोजन छादन और व्यवहार करें अर्थात् जितनी क्षुधा हो उससे कुछ न्यून भोजन करें। मद्य मांसादि के सेवन से अलग रहें। अज्ञात गम्भीर जल में प्रवेश न करें क्योंकि जलजन्तुवा किसी अन्य पदार्थ से दुःख और जो तैरना न जाने तो डूब ही सकता है। नाविज्ञाते जलाशये यह मनु का वचन। अविज्ञात जलाशय में प्रविष्ट हो के स्नानादि न करें। क्योंकि मनुस्मृति का वचन है कि-

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यापूतां वदेद्वाचं मनःपूतः समाचरेत्

अर्थात् नीचे दृष्टि ऊँचे नीचे स्थान को देख के चले, वस्त्र छान के जल पिये, सत्य से पवित्र करके वचन बोले और मन से विचार करके आचरण करे। किसी कवि ने सन्तानों की शिक्षा के लिए कहा है कि-

माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

अर्थात् वे माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण वैरी हैं जिन्होंने उनको विद्या की प्राप्ति नहीं कराई। वे विद्वानों की सभा में वैसे ही तिपस्कृत और कुशोभित होते हैं जैसे हंसों के बीच में बगुला। यही माता पिता का कर्त्तव्य कर्म परमधर्म और कीर्ति का काम है जो अपने सन्तानों को तन, मन, धन से विद्या, धर्म सभ्यता और उत्तम शिक्षा युक्त करते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमरकृति सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास के अनुसार शिक्षा के विषय पर प्रकाश ड़ाला है। हमें सन्तानों को किस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए, कैसा उनका आचरण होना चाहिए इस विषय पर सुन्दर प्रकाश डाला है। आज समाज के अन्दर समस्त बुराईयों का कारण बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं मिलना है। अगर हम सन्तानों का सुशिक्षित करना चाहते हैं तो हमें महर्षि के अनुसार उन्हें उच्च संस्कारों से युक्त करना होगा। अगर हम अपने समाज से बुराईयों को समाप्त करना चाहते हैं तो हमारा उत्तरदायित्व है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को अच्छी शिक्षा, अच्छे संस्कारों तथा अच्छे गुणों से विभूषित करें।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज पक्का बाग में वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज ऋषिकुंज पक्का बाग में स्वतन्त्रता सेनानी श्री करतार नाथ आर्य की स्मृति में वेद प्रचार का विशेष आयोजन समाज के प्रधान चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट व मन्त्री विनय आर्य की देखरेख में सम्पन्न हुआ। इस मौके पर प्रातः हवन यज्ञ पं. सुभाष शास्त्री द्वारा करवाया गया। इसके पश्चात श्री राजेश प्रेमी जी ने अपने मधुर भजनों से सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया। समारोह की अध्यक्षता श्री शादी लाल महेन्द्रू प्रधान आर्य समाज बंगा, अंतरग सदस्य आर्य प्रतिनिधि पंजाब द्वारा की गई। इस मौके पर स्वतन्त्रता सेनानी श्री करतार नाथ आर्य की देश व आर्य समाज के प्रति की गई निष्काम सेवाओं को याद किया गया। इस अवसर पर आचार्य देवराज शर्मा जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा आर्य समाज के उत्थान में निभाई गई अहम भूमिका के बारे में प्रकाश ड़ाला। इस मौके पर प्रधान ऋषिपाल सिंह एडवोकेट ने कहा कि देश व समाज के उत्थान में आर्य समाज ने विशेष योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि आर्य बनना और आर्य समाज के साथ जुड़ना बड़े सौभाग्य की बात है। मंत्री विनय आर्य ने कहा कि भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन होता रहेगा। अपने अध्यक्षीय भाषण में शादी लाल महेन्द्रू ने कहा कि हम सभी नये लोगों को आर्य समाज की विचारधारा के साथ जोड़े। इस मौके पर उपरोक्त गणमान्यों को आर्य समाज की तरफ से दोशाले भेंट कर सम्मानित किया गया। इस मौके पर समारोह में स्वतन्त्रता सेनानी श्री करतार नाथ आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती कैलाशवन्ती, विजय आर्य, रणजीत आर्य, सुदर्शन आर्य, सुरेश शास्त्री, विजय भारद्वाज, एडवोकेट चांद कुमार तथा शहर के विभिन्न आर्य समाजों के गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

-विनय आर्य मन्त्री आर्य समाज

www.thearyasamaj.org

हमारा सर्वस्व–'ईश्वर, वेद और सृष्टि'

-ले० श्री मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून।

हम मनुष्य हैं और वेदों ने हमें दो पैर वाला प्राणी कहा है। हमारा शरीर जड़ है जिसमें एक जीवात्मा नाम से जाना जाने वाला चेतन तत्व निवास करता है। हम कहते हैं कि यह मेरी आंख है, यह मेरी नाक है, यह मेरा कान है और यह मेरा हाथ है आदि, इससे ज्ञात होता है कि मैं आंख, नाक, कान व हाथ आदि या मेरा पूरा शरीर 'मैं' नहीं हूं बल्कि इन से भिन्न हूं। यह शरीर एवं इसमें सभी अंग मेरे अवश्य हैं परन्तु मैं इन सबसे भिन्न हूं। मैं कैसा हूं तो अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि मैं एक चेतन तत्व हूं जो अत्यन्त सूक्ष्म, नेत्रेन्द्रिय से अगोचर, सत्य, अविनाशी, अजन्मा, अमर, नित्य, अल्पज्ञ, अल्प परिमाण, अणुरूप, एकादेशी, ससीम, शुभ-अशुभ कर्मों का कर्ता व इनके सुख व दुख रूप फलों का भोक्ता हूं। इस संसार में मेरा जन्म माता व पिता से हुआ है। जन्म धारण करने में मेरी व किसी की भी मर्जी नहीं चलती। यदि जन्म लेने की स्वतन्त्रता होती तो मैं कहीं और व किसी अन्य माता-पिता से जन्म लेता। मुझे जन्म देने वाला माता-पिता से भिन्न अन्य कोई अवश्य है जिसने निर्णय किया कि वर्तमान जीवन के माता-पिता मेरे माता-पिता होगें। फिर प्राकृतिक प्रक्रिया से मेरा जन्म हो गया। मुझे कर्म करने की स्वतन्त्रता है पर मैं फलों के बन्धन में बन्धा हुआ हूं। अल्पज्ञ व अल्प शक्ति वाला होने से मैं जो कार्य करता हूं उसमें कमियां रह जाती हैं। विद्याध्ययन एवं पुरूषार्थ से मैं अपने कार्यों में दक्षता प्राप्त करता हूं। ऐसा करके मैं एक सामान्य व्यक्ति बनता हूं जो अपना निर्वाह अन्यों की तरह सामान्य रूप से या उनसे कुछ उन्नत तरीके से व्यतीत करता हूं। यह कुछ-कुछ मेरा परिचय है।

हमारी वर्तमान पीढ़ी व सृष्टि की आदि से लेकर अब तक उत्पन्न हुए सभी पूर्वजों व नाना योनियों के जीवधारियों को यह सारा संसार बना बनाया मिला है। हम सूर्य, चन्द्र, तारे, नक्षत्र, नाना ग्रह व आकाशीय छोटे-बड़े पिण्ड, आकाश, पृथिवी, अग्नि, वायु, जल, वन, पर्वत, नदियां, समुद्र, अन्न-ओषधियां आदि वस्पतियां आदि संसार में देखते हैं जो सभी हमें बनी बनाई मिली हैं। यह सब वस्तुयें किससे प्राप्त हुई हैं ?, हम व प्राय: सभी लोग इस पर विचार नहीं करते। हमें लगता है कि सभी मनुष्य रात-दिन केवल अपने-अपने अन्य-अन्य कार्यों में लगे हैं और इस ओर ध्यान ही नहीं जाता। एक कारण यह भी है कि यदि वह इसका उत्तर भिन्न-भिन्न मत के धार्मिक लोगों से पूछते हैं तो उनके उत्तरों से समाधान नहीं होता। वे या तो परम्परागत, अविवेकपूर्ण या असत्य उत्तरों को मान लेते हैं या उसे स्वीकार ही नहीं करते। उनके पास इस बात के लिए समय नहीं हैं कि वह उन विद्वानों की तलाश करें जो इनके सत्य उत्तर जानते हैं। इस सब उत्तरों में से एक उत्तर है कि यह सारा संसार एवं इसकी समस्त वस्तुयें एक परम विशाल, अनन्त, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान चेतन सत्ता ने बनाई हैं। उसे सृष्टि बनाने व चलाने का ज्ञान है और अब तक वह अनन्त बार सृष्टि को बनाकर चला चुका है और यह क्रम अनन्त बार इसी प्रकार से चलेगा। इस सृष्टि के आदि से ईश्वर इसे बना कर चला रहा है। 4 अरब 32 करोड़ वर्ष की सृष्टि की आयु है। जब यह पूर्ण हो जायेगी तो ईश्वर द्वारा यह सृष्टि प्रलय को प्राप्त हो जायेगी। प्रलय की अवस्था वह अवस्था है जो सृष्टि की रचना से पूर्व की, इसकी कारण अवस्था थी अर्थात् सत, रज व तम की साम्यावस्था। विवेक से यह ज्ञान होता है कि ईश्वर इस सृष्टि को धारण कर रहा है। जब तक वह इसे धारण किए हुए है, यह संसार भली-भांति चल रहा है। ईश्वर की रात्रि के आरम्भ होने पर कि जब वह सृष्टि को धारण नहीं करता, वह अवस्था प्रलय की होती है। तब सब कुछ नष्ट हो जायेगा। सूर्य, चन्द्र, तारे, सभी आकाशीय पिण्ड व पृथिवीस्थ सभी रचनायें अपने कारण-मूल प्रकृति में विलीन हो जायेगीं।

जिस प्रकार हमारा आत्मा अति-सूक्ष्म है, यह हम सब अनुभव करते है। यह चेतन तत्व, ज्ञान व कर्म स्वभाव वाला है, यह भी हम अनुभव करते हैं। यह इतना सूक्ष्म हैं कि न तो हम स्वयं की आत्मा को देख पाते हैं न अन्य प्राणियों की आत्माओं को जो दैनिक जीवन में माता-पिता, भाई, बहिन, पत्नी व बच्चों के रूप में हमारे सम्पर्क में रहतीं हैं। हमें उनके केवल शरीरों के दर्शन होते हैं और आंखों को देखने पर उसमें आत्मा की चमक दिखाई देती है जो मृतक शरीर की आंखों में नहीं होती। जीवात्मा की अति सूक्ष्मता के कारण उसका आकार प्रकार हमें अपने नेत्रों में दिखाई नहीं देता। चिन्तन करने पर हमें ज्ञान होता है कि ईश्वर भी हमारी आत्मा के कुछ समान सत्य, चित्त, सर्वव्यापी, निराकार, हमारी आत्मा से भी सूक्ष्म सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान सत्ता है। उसी ने यह संसार बनाया है और वही इसको धारण किए हुए है अर्थात् इसका सर्वोत्कृष्ट रूप से संचालन कर रहा है। यहां कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति यह कहेगा कि यद्यपि वह ईश्वर को देख तो नहीं पा रहा है परन्तु ईश्वर के जिस स्वरूप का उल्लेख किया गया है, उसका होना तर्क की दृष्टि से सिद्ध है और उसका होना असम्भव नहीं है। अब प्रश्न यह है कि कैसे पता चले कि वह वस्तुत: है। यहां हम महर्षि दयानन्द का उल्लेख करना चाहते हैं। वह प्रात: व रात्रि समय में समाधि लगाया करते थे। समाधि क्या होती है ? ईश्वर का ध्यान जब स्थिर हो जाता है, टूटता नहीं, अखण्डित रहता है, उस ध्यान की निरन्तरता को समाधि कहते हैं। उन्होंने सम्यक्-ध्यान व समाधि के बारे में अपने ग्रन्थों में लिखा है। उनके अनेक अन्तेवासी बन्धुओं ने उन्हें समाधि लगाये हुए भी देखा था जिसका वर्णन साहित्य में उपलब्ध है। उन्होंने लिखा है कि ईश्वर का ध्यान वा उपासना करने से आत्मा के दुर्गुण दूर होकर ईश्वर के गुणों के सदृश हो जाते हैं और आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि बड़े से बड़े दु:ख के प्राप्त होने पर भी, यह हमारी स्वयं की मृत्यु का दु:ख भी हो सकता है, मनुष्य घबराता नहीं है, क्या यह छोटी बात है ? उनके जीवन की घटनायें उनके इस वक्तव्य की सत्यता का प्रमाण हैं। योग दर्शन के प्रणेता महर्षि पतंजलि ने अनुभव व तर्क, दोनों के आधार पर ध्यान व समाधि एवं योग के अन्य सभी अंगों पर प्रयोग व अभ्यास से सत्य सिद्ध किए जा सकने वाले निष्कर्ष दिये हैं। जब ईश्वर का ध्यान करते हुए उसमें निरन्तरता आ जाती है और साधक घंटों उसमें स्थित व स्थिर रहता है तो उस समाधि के सिद्ध होने पर हृदय में स्थित जीवात्मा में ईश्वर का साक्षात्कार, ईश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति व ईश्वर के आनन्द का अनुभव जो संसार के सभी सुखों से कहीं अधिक बढ़कर होता है, जीवात्मा को अनुभव होता है। यह साक्षात्कार ऐसा है जैसा कि हम सांसारिक जीवन में वस्तुओं को देखकर, सुनकर, पढ़कर निर्भ्रान्त व संशयरहित ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसके बारे में मुण्डक उपनिषद् के 40 वें श्लोक-'भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशय:। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।' में कहा गया है कि ईश्वर का साक्षात्कार अथवा अपने आन्तरिक ज्ञान-चक्षुओं से दर्शन हो जाने पर हृदय की सभी गांठें व ग्रन्थियां खुल जाती हैं, सभी संशय मिट जाते हैं, दुष्ट कर्म क्षय को प्राप्त होते हैं और तब उस परमात्मा जो कि अपने आत्मा के भीतर और बाहर व्याप रहा है, उस में वह जीवात्मा निवास करता है। ईश्वर के साक्षात्कार के बाद जब मृत्यु आती है तब जीव जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होकर मुक्ति में चला जाता है। मुक्ति का लाभ व सुख ऐसा है जिसकी उपमा में कोई सांसारिक सुख या पदार्थ नहीं है। हां, यह तो कह सकते हैं कि बड़े से बड़े सांसारिक सुख मुक्ति के सुख की तुलना में हेय व न्यून ही हैं। यह मुक्ति विवेकशील कुछ ही लोगों को प्राप्त होती है। हम यह अनुमान करते हैं कि अतीत में यह मुक्ति योगेश्वर कृष्ण, मर्यादा पुरूषोत्तम राम, महर्षि दयानन्द सरस्वती, इनसे पूर्व हुए सन्त, ऋषि-महर्षि व योगियों को प्राप्त हुई होगी। प्रत्येक समझदार वा ज्ञानी मनुष्य को वेद मार्ग पर चल कर मुक्ति की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होना चाहिये, ऐसा वैदिक साहित्य के विद्वानों का मत है। (शेष पृष्ठ 6 पर)

जीवात्मा-जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म

-ले० श्री शिव नारायण उपाध्याय-कोटा

आज ही ग्वालियर से मान्य बन्धु श्री अभिनय कुमार खुल्लर का पत्र प्राप्त हुआ। उनका आग्रह है कि मैं पुनर्जन्म पर एक लेख लिखूं जिससे कि इस विषय पर उठने वाली उनकी शंकाओं का समाधान हो सके। मैं यह प्रण तो नहीं करता कि मैं उनकी सम्पूर्ण शंकाओं का समाधान कर ही दूंगा परन्तु वेद एवं न्याय तथा योगदर्शन के आधार पर इस विषय पर जो कुछ वर्णन हुआ है उसे संक्षेप में रखने का प्रयास कर रहा हूँ। आज मैं वेदों का इस विषयक विहंगावलोकन कर रहा हूँ। सात आठ घन्टों के परिश्रम से जो कुछ मुझे विदित हुआ है उसे पाठकों के समक्ष रख रहा हूँ।

सबसे पहले मैं आत्मा के विषय में वेदों का कथन रख रखा हूँ।

नृचित्सहोताअमृतो नि तुन्दते होता यद् दूतो अभवद्विवस्वतः।
वि साधिष्ठेभिः पथिभी रजो आ देवताता हविषा विवासति।

ऋ. 1.58.1

मंत्र के भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं-हे मनुष्य लोगों। तुम अनादि अर्थात् उत्पत्ति रहित, सत्य स्वरूप, ज्ञानमय, आनन्द स्वरूप, सर्वशक्तिमान, स्वप्रकाश सबको धारण और सब विश्व के उत्पादक, देशकाल और वस्तुओं के परिच्छेद से रहित और सर्वज्ञव्यापक परमेश्वर में व्याप्य व्यापक सम्बन्ध से जो अनादि नित्य चेतन, अल्प, एकदेशस्थ और अल्पज्ञ है वही जीव है ऐसा निश्चित जानो।

तपुर्जम्नो वन आ वात चोदितो युथे न साह्वां अव वाति वंसगः।
अभि व्रजन नक्षितं पाजसा रजः स्वातुधरयं भयते पतत्रिणः।

ऋ. 1.58.5

भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं-मनुष्यों को योग्य है कि जो अन्तः करण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, प्राणादि दश वायु, इन्द्रिय अर्थात् श्रोत्रादि दश इन्द्रियों का प्रेरक, इनका धारण और नियन्ता स्वामी, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान आदि गुण वाला है वह देह में जीव है ऐसा निश्चित जानो।

जीव अनादि है उसका जन्म नहीं हुआ है। उसके कोई माता पिता नहीं है। इस विषय में यजुर्वेद वर्णन करता है-

स्वयंभूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वर्चोदाऽ असि वर्चो मे देहि।
सूर्यस्या वृतमन्वावर्ते।

यजुर्वेद 2.26

पदार्थ-हे जगदीश्वर। आप विद्वन् वा (श्रेष्ठः) अत्यन्त प्रशंसनीय और (रश्मिः) प्रकाशमान वा (स्वयं भूः) अपने आप होने वाले (असि) हैं तथा (वर्चोदः) विद्या देने वाले (असि) हैं। इसी से आप (मे) मुझे (वर्च्चः) विज्ञान और प्रकाश (देहि) दीजिए। मैं (सूर्यस्य) जो आप चरा चर जगत् के आत्मा हैं उनके (आवृतम्) निरन्तर सज्जन जन जिस में वर्तमान होते हैं उस उपदेश को (अन्वावर्ते) स्वीकार करके बरतता हूँ।

भावार्थ-स्वामी जी लिखते हैं कि परमेश्वर और विद्वान् जीव का कोई माता वा पिता नहीं है किन्तु यही सबका माता पिता है। न्याय दर्शन 1.1.10 में आत्मा के लक्षण इस प्रकार बतलाये हैं-

इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञानान्यात्मनोलिङ्गम्। आत्मा निराकार है। वह कर्म करने में तभी समर्थ होता है जब उसे प्रकृति से बना हुआ शरीर प्राप्त हो जाता है। कहा भी गया है कि आत्मा लंगड़ा तथा प्रकृति अन्धी है। जब ये दोनों मिलकर सहयोग करते हैं तभी सृष्टि कार्य करने लगती है। शरीर की परिभाषा करते हुए न्याय दर्शन कहता है-

चेष्टेन्द्रियार्थाश्रयः शरीर। न्याय द. 1.1.11

हित की प्राप्ति तथा अहित के परिहार रूप चेष्टा, इन्द्रिय एवं विषयों के आधार को शरीर कहते हैं। शरीर में आकर जीवात्मा कर्म करने लगता है, मन और इन्द्रियों का प्रेरक बन उनके विषयों की ओर उन्हें चलाता है। इन्द्रियां दश हैं, पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्मेन्द्रियां। ये पांच भूतों से बनी होती है।

प्राणरसन चक्षुस्त्वक् श्रोत्राणीन्द्रियाणि भूतेभ्यः। न्याय द. 1.1.12

नाक, जिह्वा, आंखें, त्वचा और कान ये पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं। ये पंचभूतों से बनी हुई हैं।

गन्ध रस रूप स्पर्श शब्दः पृथिव्यादिगुणास्तदर्था॥

न्याय दर्शन 1.1.14

गन्ध, रूप, रस, स्पर्श और शब्द के क्रम से पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु और आकाश के गुण जाने जाते हैं।

युगपज्ज्ञानानुत्पतिर्मनसो लिङ्गम्। न्याय दर्शन 1.1.16

एक काल में अनेक ज्ञानों का उत्पन्न न होना मन का लिङ्ग है।

हाथ, पैर मुख (जिह्वा) उपस्थ इन्द्रिय और पायु पांच कर्मेन्द्रियां हैं। फिर इनसे कर्म क्यों किया जाता है इस विषय में न्याय दर्शन कहता है।

शरीर द्वारा वाक्, बुद्धि मन आदि के कार्य आरम्भ करने की प्रवृत्ति है। जब शरीर द्वारा कार्यारम्भ हो गया है तो जैसा कि विज्ञान का नियम है कि प्रत्येक कर्म का उतना ही प्रति फल भी होता है प्रकृति के प्रति किये अपराध फल तो प्रकृति तुरन्त दे देती है अनैतिक व अपराध जन्य कर्मों का फल देने की कोई व्यवस्था होनी चाहिए। यह कार्य राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत आता है परन्तु शातिर अपराधी राज्य व्यवस्था की पकड़ में ही नहीं आते हैं। उन्हें इन कर्मों का फल ईश्वर ही देता है। हम जो सामान्य अच्छे या बुरे कर्म करते हैं उनमें से अधिकांश का फल तो इसी जन्म में भोग लेते हैं परन्तु कुछ कर्म शेष रह जाते हैं जो हमारा प्रारब्ध बनाते हैं। इस विषय में हम अब वेद के विचार रखते हैं।

कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे।
उपोपेन्तुमघवन् भूयऽइन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते॥ यजु. 3.34

मंत्र के भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं-जो ईश्वर कर्म के फल देने वाला नहीं होता तो कोई भी प्राणी व्यवस्था के साथ किसी कर्म के फल को प्राप्त नहीं हो सकता।

कर्म फल ईश्वर देता है इस विषय में यजुर्वेद में कहा गया है-

कोऽदात्कस्माऽअदात्कामोऽदात्कामायादात्।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते॥ यजुर्वेद 7.48

पदार्थ-(कः) कौन कर्म फल को (अदात्) देता और (कस्मै) किस के लिए (अदात्) देता है। इन दो प्रश्नों के उत्तर (कामः) जिसकी कामना सब करते हैं वह परमेश्वर (अदात्) देता है। (कामः) कामना करने वाला जीव (प्रतिग्रहिता) लेने वाला है। हे (कामः) कामना करने वाले जीव। (ते) तेरे लिए मैंने वेदों के द्वारा (एतत्) यह आज्ञा दी है ऐसा तू निश्चित करके जान।

इदमापः प्र वहत यत्किञ्च दुरित मयि।
यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा उतानृतम्॥

ऋ. 1.23.22

पदार्थ-मैं (यत्) (जैसा) (किन्) कुछ (मयि) कर्म का अनुष्ठान करने वाले मुझ में (दुरितम्) दुष्ट स्वभाव के अनुष्ठान से उत्पन्न हुआ पाप (च) अथवा श्रेष्ठता से उत्पन्न हुआ पुण्य वा अथवा (यत्) अत्यन्त क्रोध से (अभिदुद्रोह) प्रत्यक्ष किसी से द्रोह करता अथवा किसी से मित्रता रखता वा अथवा (यत्) जो कुछ अत्यन्त ईर्ष्या से किसी सज्जन को (शेपे) शाप देता अथवा किसी को कृपा दृष्टि से चाहता हुआ जो (अनृतम्) झूठ (उत) अथवा सत्य काम करता हूँ (इदम्) यह सब आचरण किये हुए को (आपः) मेरे प्राण मेरे साथ होकर (प्रवहत) अच्छे प्रकार प्राप्त होते हैं।

भावार्थ-मनुष्य लोग जैसा कुछ पाप वा पुण्य करते हैं सो ईश्वर अपनी न्याय व्यवस्था से उनको प्राप्त करता ही है।

स्वामी दयानन्द यजुर्वेद 2.28 के भावार्थ में लिखते हैं-मनुष्य को यही निश्चय करना चाहिए कि मैं अब जैसा कर्म करता हूँ वैसा ही परमेश्वर की व्यवस्था से फल भोगता हूँ और भोगूंगा। सब प्राणी अपने कर्म से विरूद्ध फल को कभी नहीं प्राप्त होते हैं। इससे सुख भोगने के लिए धर्म युक्त कर्म ही करना चाहिए कि जिससे कभी दुःख नहीं हो।

ऋ. 2.38.8 के मंत्र के भावार्थ में स्वामी जी लिखते हैं-जितने इस जगत् में जीव हैं वे अपने कर्म जन्य फल को विद्यमान शरीर में और पीछे भी (अगले जन्म में भी) प्राप्त होते हैं।

नवाउ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुरूताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोप दस्यत्युतापृणन्मर्डितारं न विन्दते।

ऋ. 10.117.1

पदार्थ-(देवाःउ) देवों ने (वे) निश्चय से सबको (क्षुधम्) भूख (न इत्) नहीं (ददुः) दी है अपितु (वधम्) मृत्यु दी है। (उत) और (आशितम्) खाने वाले को भी (मृत्यवः) मृत्यु (उप गच्छान्ति) प्राप्त होती है (उत) और (प्रणतः) देने वाले का (रयिः) धन (न) नहीं (उपदस्यति) नष्ट होता है (उत) और (अमृणम्) न देने वाला (मर्डितारम्) सुख देने वाले को (न) नहीं (विन्दते) प्राप्त करता है।

जब जीव शरीर छोड़ देता है तब क्या होता है ?

सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा।
अपो धा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः।

ऋ. 10.16.3

भावार्थ-जीव जब शरीर को छोड़ देता है तब चक्षु सूर्य को प्राप्त हो जाता है। आत्मा प्राणवायु को प्राप्त होता है और कर्म फलानुसार नये शरीर धारण कर पृथ्वी लोक, आकाश और जलों में जाता है तथा औषधि और वनस्पतियों में भी जाकर कर्म फल को भोगता है।

योगदर्शन का मानना है कि मनुष्य को जन्म, आयु और भोग पिछले जन्म के संचित कर्मों के आधार पर मिलता है ऐसा एक पत्र मुझे रोहिणी दिल्ली से श्री हरिओम सिंह ने लिखा था और यह भी कि इस जन्म के कर्मों का फल तो अगले जन्म में मिलेगा। मैंने उन्हें लिखा था कि ऐसा नहीं है। पूर्व जन्म के आधार पर जन्म तो मिल गया परन्तु आयु और भोग के लिए इस जन्म में ही पुरुषार्थ करना होगा।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ऋ. 3.1.21 के भावार्थ में लिखते हैं, "सब मनुष्यों को जगत् में सुख दुःख आदि न्यून अधिक फलों को देखकर पहिले जन्म में सञ्चित कर्म फल का अनुमान करना चाहिए। जो परमेश्वर कर्म फल को देने वाला न हो तो व्यवस्था को प्राप्त न हो इसलिए सबको श्रेष्ठ बुद्धि उत्पन्न कर वैरादि छोड़कर सबके साथ सत्यभाव से वर्तना चाहिए।"

जब जीव शरीर को छोड़कर जाता है तो क्या साथ ले जाता है। (क्रमशः)

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ 4 का शेष- हमारा सर्वस्व.....

इस विवरण से हम समझते हैं कि आधुनिक, तार्किक व विचारशील माने जाने वाले युवा-वृद्ध बन्धु भी काफी सीमा तक ईश्वर के अस्तित्व व उसके साक्षात्कार के सिद्धान्त व मान्यता से सहमत होगें। यदि उन्हें कहीं कुछ भी शंका है तो हमारा सुझाव है कि वह स्वयं वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय एवं योग का व्यवहारिक प्रयोग करके देख सकते हैं। कुछ दिनों के स्वाध्याय व अभ्यास से उन्हें अनुमान होगा कि ईश्वर, जीवात्मा व ईश्वर के साक्षात्कार की मान्यतायें सत्य व यथार्थ हैं। इस लेख की यहां तक की यात्रा के बाद एक साधक व अध्येता की ज्ञान प्राप्ति की तीव्र अभिलाषा का उत्पन्न होना स्वाभाविक लगता है। उसे यह भी अनुमान हो गया होगा कि ईश्वर ने जब सृष्टि बनाई तो लोगों के कल्याण के लिए उसने कुछ ज्ञान तो आदि मनुष्यों को अवश्य दिया ही होगा अन्यथा वह अपने सभी सांसारिक व्यवहार कैसे करते और ईश्वर का ज्ञानवान व सर्वशक्तिमान होना व्यर्थ सिद्ध होता है। यदि वह ज्ञान नहीं देता तो अनेक पीढ़ियां तो बिना किसी धर्म-कर्म का पालन किये ही समाप्त हो जाती और यदि अन्य किसी हेतु से, जो सर्वथा असम्भव है, ज्ञान प्राप्त भी होता तो उसमें भी नाना मत होते और सत्य व असत्य का निर्णय करना कठिन हो जाता। अत: जिज्ञासा उठने पर हमें स्वाध्याय व विवेक से ज्ञात होता है कि संसार की सबसे प्राचीन ज्ञान की पुस्तक का नाम वेद है। वेद चार हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। सौभाग्य से हमारे पूर्वजों के पुरूषार्थ से यह आज भी अपने शुद्ध रूप में उपलब्ध हैं। अब बात आती है कि वेदों के सत्य अर्थ कैसे जाने जायें तो इसके लिए भी हमारे पूर्वजों ने अथक परिश्रम किया और हमें संस्कार की अष्टाध्यायी-महाभाष्य-निरूक्त-निघण्टु पद्धति दी है जिसका अध्ययन कर कोई भी व्यक्ति स्वयं वेदों के अर्थों को जान सकता है। यदि किसी कारण संस्कृताध्ययन में परिश्रम नहीं कर सकता है, तो महर्षि दयानन्द सरस्वती, आचार्य रामनाथ वेदालंकार, स्वामी विश्वनाथ विद्यालंकार व अन्य विद्वानों के उपलब्ध वेद भाष्यों से लाभान्वित हो सकता है। हमारा अनुमान है कि सच्चे जिज्ञासुओं को ईश्वर व सृष्टि विषयक सभी प्रश्नों का उत्तर व समाधान प्राप्त हो जायेगा। हमारा सुझाव है कि वेदों के सत्य-अर्थों को जानने के इच्छुक सभी जिज्ञासुओं को पहले सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका व आर्याभिविनय आदि पुस्तकें अवश्य पढ़नी चाहिये, जिससे उन्हें ईश्वर व सृष्टि आदि के विषय में प्रभूत ज्ञान हो जायेगा। हम अनुभव करते हैं कि वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर सभी अध्येता यह पायेगें कि वेदाध्ययन से उनका जीवन सफल हुआ है। अन्य लोग जो वैदिक साहित्य के सम्पर्क में नहीं आ पाते है, उनकी ऐसी स्थिति होना सम्भव नहीं है।

अब हम सृष्टि पर विचार करते हैं। वेद एवं वैदिक साहित्य उत्तर देते हैं कि परमात्मा ने यह सृष्टि हमारे त्यागपूर्वक उपभोग के लिए बनाई है। ईश्वर को यह ज्ञान था कि जिन मनुष्यों को वह उत्पन्न कर रहा है, उनकी आवश्यकतायें क्या-क्या होगीं। उसने उदर व जिह्वा भी हमें प्रदान की है। जब व्यक्ति कार्य करता है तो थक जाता है और उसे भूख-प्यास लगती है। भूख की निवृत्ति के लिए भोजन व प्यास की निवृति के लिए जल की आवश्यकता होती है। अत: ईश्वर ने जल व नाना प्रकार के भोजन के पदार्थ बनाये हैं। शरीर को ढकने के लिए वस्त्र की आवश्यकता होती है, अत: इसके लिए भी रूई आदि आवश्यक पदार्थ बना कर उसका वस्त्र बनाकर उसे उपभोग करने का ज्ञान भी वेद ने हमारी आत्मा, मन व बुद्धि में दिया है। इसी प्रकार शरीर में जो इन्द्रियां हैं, उन सबके विषय बनाकर सृष्टि में उपलब्ध करा रखे हैं। यह सृष्टि हमारे शरीर व जीवन के निर्वाह के लिये आवश्यक है। इसका सदुपयोग करना ईश्वर को प्रसन्न करना है और इसका दुरूपयोग करना ईश्वर को नाराज करना है। हम संसार में भी देखते हैं कि हमें किसी से कोई भी वस्तु सदुपयोग के लिए ही दी जाती है। सिपाही को बन्दूक सदुपयोग के लिए दी गई है, यदि वह दुरूपयोग करता है तो अपराधी बन कर सजा पाता है। हमें सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का अल्प मात्रा में उपयोग करना है। परिग्रह योग व ईश्वर प्राप्ति में बाधक है। अत: अनावश्यक परिग्रह से बचना चाहिये। शरीर को स्वस्थ रखते हुए ध्यान-उपासना से ईश्वर को प्राप्त कर ब्रह्मवर्चस को प्राप्त हों और मृत्यु के पश्चात ब्रह्मलोक अर्थात मुक्ति या मोक्ष के अधिकारी बनकर जन्म-मरण के दु:खों से मुक्ति प्राप्त करें।

हमने अपने ज्ञान व अनुभव से यह जाना है कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य आत्मा, ईश्वर व सृष्टि का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर योग साधनों से ईश्वर का साक्षात्कार करना व मृत्यु तक की अवधि तक जीवन-मुक्त अवस्था का समय व्यतीत कर मृत्यु के पश्चात जन्म मरण से छुटकर मुक्ति को प्राप्त करना है। ईश्वर के साक्षात्कार व मुक्ति प्राप्त के यथार्थ साधन यथा ईश्वरोपासना, यज्ञ, सेवा, परोपकार, सत्संग आदि केवल वैदिक धर्म में ही उपलब्ध हैं। इनको जानना व आचरण करना ही हमारे व सभी मनुष्यों के जीवन का सर्वस्व या परम लक्ष्य है। हमारे ऋषि-मुनियों ने ईश्वर प्राप्ति व मुक्ति के मार्ग को ही मनुष्य का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसके विपरीत जो मार्ग हैं वह मनुष्य को इस जन्म व परजन्म में सुख, स्मृद्धि व मुक्ति के स्थान पर बन्धन में डालकर दु:खमय जीवन व्यतीत कराते हैं। अत: प्रत्येक समझदार व्यक्ति को गहन विचार व चिन्तन कर अपने लक्ष्य का निर्धारण कर उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नरत होना चाहिये। यदि इस लेख से किसी को लाभ होता है तो हम अपना परिश्रम सार्थक समझेगें।

वैदिक कार्यकर्त्ता परिवार सम्मेलन

नवलखा महल, उदयपुर में आर्य परिवारों के सदस्यों में परस्पर प्रगाढ़ सम्बन्धों में निरन्तरता सुनिश्चित करने तथा वैदिक परिवारों के सदस्यों में वैदिक संस्कृति का गम्भीर प्रसरण करने के उद्देश्य से दिनांक २२.१२.२०१३ को यह मनोरंजक, प्रेरणास्पद सारगर्भित कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में संस्कार सम्प्रेषण के अनेक पहलुओं को स्पर्श किया गया। महर्षि दयानन्द विद्यालय, फतेहनगर के प्रबन्धक श्री सुरेश मित्तल के निर्देशन में तैयार 'कठपुतली शो' से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। यह 'शो' केवल मनोरंजक ही नहीं, वैदिक भजनों तथा शिक्षात्मक सम्वादों से गुम्फित होने के कारण प्रेरणास्पद भी था। वैदिक ज्ञान परीक्षा शो के उपरान्त चाय-बिस्किट के दौर के बीच परिचय होता रहा। सभी सम्भागियों को स्वाध्याय हेतु पूर्व में वैदिक साहित्य भेजा गया था। तदाधारित प्रतियोगिता प्रो. ए. एल. तापड़िया के निर्देशन में वरिष्ठ व कनिष्ठ वर्ग बना कर ली गयी। इस परीक्षा में वरिष्ठ वर्ग में सर्वश्री धीरज अड़ोरा, इन्द्रप्रकाश यादव व प्रमोद उज्ज्वल ने तथा कनिष्ठ वर्ग में चि. हिरेण गुप्ता, गौरव खण्डेलवाल, संस्कार खण्डेलवाल ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी को न्यास द्वारा पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर नवनीत आर्य व सुरेश पाटोदी के निर्देशन में 'वैदिक हाउजी' का आयोजन किया गया। परम्परागत हाउजी निरर्थक व समय नष्ट करने वाली होती है, पर उक्त हाउजी में शब्दों के उच्चारण के पश्चात् सत्यार्थप्रकाश प्रथम समुल्लासस्थ ईश्वर के नाम बनते हैं। इस प्रतियोगिता में प्रथम पंक्ति, मध्यम पंक्ति, अंतिम पंक्ति तथा हाउस के पुरस्कार वितरित किए गए। यज्ञोपरान्त भजन-प्रवचन के क्रम में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जयपुर से पधारे, न्यास के संरक्षक श्री बी. एल. अग्रवाल जी ने Sharing का नई पद्धति अपनाते हुए ११-१२ सम्भागियों को साथ लेकर आर्य समाज के दश नियमों की व्याख्या की। श्री अग्रवाल का अभिनन्दन न्यास मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने किया। कार्यक्रम संयोजक श्री नारायण मित्तल ने सभी कार्यक्रम में सुदक्षता रखी।

कार्यक्रम का सफल संचालन आर्य समाज, हिरणमगरी के उपमंत्री श्री भूपेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया। ऐसे कार्यक्रम निरन्तर होते रहने चाहिए के संदेश के साथ शान्ति पाठ व सहभोज के उपरान्त कार्यक्रम का समापन हुआ।

-अशोक आर्य कार्यकारी अध्यक्ष

श्रद्धांजलि सभा

गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट के प्रधान श्री चतुर्भुज मित्तल जी का गत दिनों देहावसान हो गया। उनका अन्तिम शोक दिवस दिनांक 12 जनवरी, 2014 रविवार को दोपहर 11 बजे से 1.30 बजे तक श्रीराम हाल देवी तालाब मंदिर टांडा रोड जालन्धर में होगा। इस अवसर पर बहुत ही उच्चकोटि के विद्वान, सन्यासी एवं महात्मा उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

प्रवेश सूचना

आर्य कन्या गुरूकुल शास्त्री नगर लुधियाना में सत्र 2014-2015 के छठी कक्षा(आयु +9 से -11 वर्ष) एवं सातवीं कक्षा (आयु +10 से -12 वर्ष) में कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण-पत्र(मूल्य केवल 100/-रूपये) भरकर 30-03-2014 तक गुरूकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं। कन्याओं की प्रवेश परीक्षा 6 अप्रैल 2014 दिन रविवार को प्रात: 8:00 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा। **-सत्यानन्द मुंजाल कुलपति**

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज रामां में युग पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस दिनांक 22/12/2013 को बड़ी ही श्रद्धापूर्वक मनाया गया। पुरोहित श्री दीनानाथ जी ने वैदिक रीति से वेद मन्त्रों द्वारा यज्ञ वेदी पर विराजमान यज्ञमान जोड़ों श्रीमति एवं श्री रवी कुमार जी शर्मा, श्रीमति एवं श्री भारत भूषण जी, श्रीमति एवं श्री अवतार कृष्ण जी, श्रीमति एवं श्री आशु जी, श्रीमति एवं श्री सतीश जी आर्य सभी यज्ञमान जोड़ों को श्रद्धापूर्वक यज्ञ में आहुतियाँ डाल कर स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की व पुण्य के भागी बने। पं. कुलदीप शर्मा जी भास्कर घरौंडा (चौड़ा माजरा) से पधारे। पंडित जी ने अपनी मधुर वाणी द्वारा प्रोग्राम में पधारे सभी धर्म प्रेमी माताओं बहनों एवं भाईयों, बच्चों को भजन कार्यक्रम द्वारा मन्त्र मुग्ध कर प्रोग्राम को चार चाँद लगाऐ। श्री सत्त प्रकाश जी आर्य हिसार वाले व डा. विजय कुमार जी कालांवाली से पधारे एवं श्री वेद प्रकाश जी ग्रोवर, पूर्व प्रधान देसराज जी, श्री प्यारे लाल जी, श्री रमेश जी, आर्य श्री विश्व बन्धु जी सभी ने मिल कर प्रोग्राम की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं प्रधान सत्तपाल जी आर्य, उप प्रधान विजय कुमार जी आर्य, पूर्व मन्त्री तुलसी आर्य सभी ने आये हुए मेहमानों का स्वागत किया। इसके बाद प्रधान जी की तरफ से जलपान की व्यवस्था की गयी। **-शक्ति प्रकाश मन्त्री**

आर्य समाज धूरी में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

आर्य समाज मंदिर धूरी में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस महाशा प्रतिज्ञापाल जी की अध्यक्षता में एवं प्रधान प्रहलाद आर्य की अध्यक्षता में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर सबसे पहले विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। इसके बाद सबसे पहले यश चौधरी मॉडल हाई स्कूल के विद्यार्थियों का मधुर भजन व प्रवचन हुआ। वासुदेव आर्य. आर पी० शर्मा. व सोमप्रकाश आर्य, प्रधाना कृष्णा आर्य जी ने स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री रामपाल जी ने बहुत अच्छे ढंग से किया। आर्य समाज के प्रधान श्रीमान प्रहलाद आर्य ने आए हुए सभी आर्यो को धन्यवाद किया और बताया कि ऐसे महान पुरुष से हमें श्रेष्ठ पुरुष बनने के लिए हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। इस अवसर पर आर्य स्कूल, यश चौधरी व आर्य कालेज के विद्यार्थियो ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

इस मौके पर रमेश आर्य, यश चौधरी मॉडल स्कूल के मैनेजर सतीश आर्य, आर्य कालेज के मैनेजर पवन गर्ग जी, आर्य समाज के कोषाध्यक्ष अशोक जीदंल जी, स्त्री समाज के प्रधाना कृष्णा आर्य जी, प्रिंसीपल वी० एल कालिया जी, धर्मदेव जी, मोनिका वाट जी, डा० एस. के सरीन जी, एवं समस्त अधिकारीगण ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया इसके बाद शान्ति पाठ किया गया व ऋषि प्रसाद वितरण किया गया। **-मन्त्री आर्य समाज**

बंगाल में बन गया डंका वेद प्रचार का

सुदीर्घकाल की उपेक्षा उदासीनता, आलस्य प्रमाद और जड़ताग्रस्त ग्रामी बंगाल में निष्क्रिय, निस्तेज एवं मृतप्राय आर्य समाजों को पुन: जागृत करने की कामना लेकर हम पचासों बंगाली विद्वान (बंगाल के अन्दर और बाहर) मिलकर एक संस्था बनाई, जिसका नामकरण बंगीय वेद प्रचार सभा किया गया। इस सभा ने विगत दिनों में मेदिनीपुर शहर में एक नूतन आर्य समाज की स्थापना की। बंगीय वेद प्रचार सभा एवं मेदिनीपुर आर्यसमाज के तत्वावधान में मेदिनीपुर शहर स्थित प्रसिद्ध विद्यासागर हाल में एक विशाल वेद प्रचार सम्मेलन १६-१७ नवम्बर १३ को बड़े ही धूम-धाम, उत्साह, उमंग और हर्ष के साथ मनाया गया, जिसमें मेदिनीपुर जिले के शताधिक आर्य समाजें और आस पास के जिले की आर्य समाजों ने भाग लिया, और इस सम्मेलन में कलकत्ता, आर्य समाज, बड़ा बाजार आर्य समाज हावड़ा आर्य समाज, आसनसोल आर्य समाज और भवानीपुर स्त्री आर्य समाज का उदार, अक्रपण और स्वतस्फूर्त सहयोग के लिए हम धन्य है।

समारोह में प्रात: योग शिविर, विश्व कल्याण महायज्ञ, वेद सम्मेलन एवं धर्म सम्मेलनों में आर्य जनता की अपार भीड़ उमड़ पड़ी। योग शिविर का उदघाटन श्री चाँद रतन दम्माणी ने किया। अतिथि के रूप में श्री रमेश अग्रवाल, ओ३म् पताका प्रसिद्ध लेखक, चिन्तक श्री खुशहाल चन्द्र आर्य ने शुभारम्भ किया। समारोह का उदघाटन प्रसिद्ध समाज सेवी, मार्स प्लाई के मालिक, डी. ए. वी. शिलिगुड़ी के महासचिव श्री रोशन लाल अग्रवाल मुख्य अतिथि, श्री जगदीश प्रसाद केड़िया एवं विशेष अतिथि श्रीमती शशि नागपाल तथा श्री चाँद रतन दम्माणी ने दीप जलाकर किया। उपस्थित अतिथिओं, विद्वानों, आर्य जनता और कार्यकर्त्ताओं का स्वागत, अभिनन्दन धन्यवाद स्वागतध्यक्ष श्री श्रीराम आर्य एवं स्वागत मन्त्री श्री प्रमोद आर्य ने किया।

दोपहर 2 बजे से 5 बजे तक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। शोभायात्रा की सुव्यवस्था जनता की अपार भीड़, आस्था, उमंग, उत्साह देखते ही बनते थे, गुरूकुल के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणी गण और आर्य नर-नारी गाते हुए झूमते हुए घन्टों पदयात्रा में भी वे थकते नहीं थे, शोभा यात्रा में इस प्रकार लोगों का दीवानापन अपार भीड़ देखकर कलकत्ते के श्री आनन्द देव आर्य आदि सज्जनों को कहते हुए सुना-हम कलकत्ता में लाखों रूपये खर्च करके भी ऐसी शोभा यात्रा निकाल नहीं पाते हैं।

रात दिन एक करके, अथक परिश्रम, त्याग तथा तपस्या करके अर्थ संग्रह, भोजन-निवास आदि की व्यवस्था, जन प्रतिनिधियों से सम्पर्क, आदि सम्मेलन की सारी व्यवस्था को एक सुन्दर सौष्ठव और वैशिष्ठ पूर्णस्वरूप देकर सम्मेलन को सफल एवं क्रान्तकारी बनाने में कलकत्ता आर्य समाज के श्री दीपक आर्य, श्री सुरेश अग्रवाल, श्री मधुसूदन शास्त्री और पं. वेद प्रकाश शास्त्री का सर्वश्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। बंगाल में इस प्रकार समारोह देख कर सब के मुख से एक ही वाक्य निकलते थे-न भूत: न हुआ, न कभी देखा।

प्रेषक पं. वेद प्रकाश शास्त्री मन्त्री-बंगीय वेद प्रचार सभा, कलकत्ता

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज बस्ती दानिशमंदा का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मन्दिर बस्ती दानिशमंदा जालन्धर का 34 वां वार्षिक उत्सव बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। 15-12-2013 से प्रभात फेरियां निकाली गई जिसमें गली-गली में ऋषि का गुणगान किया गया। 22-12-2013 को दोपहर 2:00 बजे शोभा यात्रा निकाली गई जिसका शुभारम्भ श्री अशोक पस्थी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब तथा श्री सुदेश कुमार महामन्त्री आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर ने किया। सभी नगर निवासियों के सहयोग से रास्ते में प्रसाद बाँटा गया और फूल बरसाए गए। 25-12-2013 से 28 -12-2013 तक प्रातः हवन यज्ञ किया गया तथा रात्रि 7:30 से 9:30 तक सत्संग और वेद प्रचार किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री जी के प्रवचन तथा श्री सुरिन्द्र सिंह गुलशन के भजन हुए। यज्ञ की पूर्णाहुति 29-12-2013 को प्रातः 10:00 बजे हुई। यज्ञ के ब्रह्मा श्री विजय कुमार शास्त्री तथा पं. मनोहर लाल जी थे। श्री हरि प्रकाश जी ने यजमान बनकर यज्ञ को सम्पन्न कराया। हवन यज्ञ के पश्चात ध्वजारोहण श्री देवेन्द्र शर्मा जी उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने किया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री रणजीत आर्य, कार्यालयाध्यक्ष श्री जोगिन्द्र सिंह जी, श्री सुरेश शास्त्री जी, श्री सुदेश हांडा जी बटाला से शामिल हुए। ध्वजारोहण के पश्चात मुख्य कार्यक्रम आरम्भ हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सरदारी लाल आर्य रत्न वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने की। वेद मन्दिर भार्गव नगर की देवियों ने ऋषि का गुणगान किया और श्री सुरिन्द्र सिंह जी ने बहुत ही सुन्दर भजन सुनाकर सबका मन मोह लिया। श्री सरदार सुरिन्द्र सिंह गुलशन जी ने देश भक्ति तथा प्रभुभक्ति के भजन सुनाकर सबको आनन्दित कर दिया। श्री विजय कुमार शास्त्री जी तथा श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी ने वेद का उपदेश देते हुए लोगों को वेद मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर कैबिनेट मन्त्री भगत चुनी लाल जी ने शामिल होकर कार्यक्रम की शोभा को बढाया। जालन्धर की सभी आर्य समाजों ने इस कार्यक्रम में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। सारा कार्यक्रम 2:30 बजे तक चलता रहा। आर्य समाज के प्रधान यशपाल आर्य ने आए हुए सभी विद्वानों तथा महानुभावों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का समापन शांतिपाठ के साथ हुआ तथा इसके पश्चात ऋषि लंगर लगाया गया।

-यशपाल आर्य प्रधान आर्य समाज

आर्य समाज वेद मन्दिर बस्ती दानिशमंदा के वार्षिक उत्सव में पधारने पर श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा सभा उपप्रधान, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न, श्री रणजीत आर्य सभा मन्त्री का फूल मालाएं पहना कर स्वागत करते हुए आर्य समाज के पदाधिकारी एवं अन्य सदस्य।

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।